Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–205

B.A. (Part–III) DUE Part–II Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

(i) प्रबन्ध-काव्य की दृष्टि से केशवदास की 'रामचन्द्रिका' का संक्षेप में मूल्यांकन कीजिए।

(ii) बिहारी के नीति-वर्णन पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(iii) महाकवि देव के शृंगार-चित्रण की विशेषताएँ बताइए।

(iv) पद्माकर की रचनाओं के आधार पर इनकी भाषा की समीक्षा कीजिए।

(v) रीतिकाल के अन्य कवियों से भूषण की कविता किस प्रकार भिन्न है ?

(vi) घनानन्द के काव्य में चित्रित प्रेम पीर एवं विरह वेदना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(vii) सन्त कवि रज्जव की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(viii) ''रीतिकाल के कवि यौवन और बसन्त के कवि थे।'' इस कथन की सार्थकता को संक्षेप में सिद्ध कीजिए।

(ix) 'रीति' शब्द का तात्पर्य एवं हिन्दी साहित्य में इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(x) किन्हीं **दो** नायिकाओं के लक्षण और भेदों का विवेचन कीजिए।

खण्ड–ब

प्रत्येक 8

निम्नलिखित सात व्याख्यात्मक प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण,
बतावैं न बतावैं और उक्ति को।
दरशन देत जिन्हें दरशन समुझै न
नेति-नेति कहैं वेद छाँड़ि आन युक्ति को।
जानि यह केशोदास अनुदिन राम-राम,
रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अणिमाहिं गुण देत गरिमाहि
भक्ति देहि महिमाहि नाम देहि मुक्ति को॥

3. जब ते कुँवर कान्ह रावरी कलानिधान।
कान परी बानी वाके सुजस कहानी-सी।
तब ही ते 'देव' देखी देवता सी हँसति-सी,
खीझति-सी रीझति-सी रूसति रिसानी-सी॥
छोही-सी छली सी छीनि लीनी-सी छकी-सी छीन,
जकी-सी चकी-सी लागी थकी थहरानी-सी।
बीधी-सी बधी-सी विष बूड़ी-सी विमोहित सी,
बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी-सी॥

4. दोष सौं मलीन, गुन-हीन कविता है, तौ पै,
कीने अरबीन परबीन कोई सुनि है।
बिन ही सिखाए सब सीखि हैं सुमति जौ पै,
सरस अनूप रस रूप यामैं धुनि है॥
दूषन कौं करि कै, कवित्त बिन भूषण कौं,
जो करे प्रसिद्ध ऐसौ कौन सुर मुनि है।
रामैं अरचत सेनापति चरचत दोऊ,
कवित्त रचत यातैं पद चुनि-चुनि है॥

5. वेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यौ अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की,
कोंधें में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में॥
मीड़ि राखे मुगल मनोडि राखे पात साह,
बैरी पीसि राखे वरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥

6. वहै मुसक्यानि वहै मृदु बतरानि, वहै,
लड़की ली बानि आनि डर मैं अरति है।
वहै गति लेन, औ बजावनि ललित बैन,
वहै हँसि दैन, हियरा तैं न टरति है॥
वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे की छवि,
वहै छैलताई न छिनक विसरति है।
आनन्द-निधान प्रान-प्रीतम सुजान जू की,
सुधि सब भाँतिन सौं बेसुधि करति है॥

7. रही न रानी कैकयी, अमर भई यह बात।
कौन पुरबुले पाप ते, वन पठयो जगतात॥
वन पठयो जगतात, कन्त सुरलोक सिधारेउ।
जोहि सुतु काजे मरेउ राउ, नहिं वदन निहारेउ॥
कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी।
यश-अपयश रहि गयउ रही नहिं केकयि रानी॥

8. आरती तुम ऊपरि तेरी मैं कछु नाहिं कहा हूँ मेरी॥
भाव भगति सब तेरी दीन्हीं, ताकरि सेव तुम्हारी कीन्हीं॥
मन चित सुरति शब्द सब तेरा, सो तुम लै तुमही पर फेरा॥
आतम उपजि सोंज सब तुमसे, सेवा शक्ति नाहिं कछु हमसे॥
तू आपेहि प्राणपति पूजा, रज्जब नाहिं करन को दूजा॥

खण्ड–स प्रत्येक 20

निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. ''केशव ने काव्य रचना हृदय की प्रेरणा से नहीं, अपितु पाण्डित्य प्रदर्शन के उद्देश्य से की है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

10. ''सेनापति ऋतुवर्णन करने में अग्रणी थे।'' उनके ऋतु वर्णन की विशेषताएँ बताते हुए स्पष्ट कीजिए।

11. गिरिधर कविराय की काव्यगत विशेषताओं का सोदाहरण विवेचना कीजिए।

12. रीतिकालीन काव्यों की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिन्दी के आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य-प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।